नार्वे के प्रवासी हिंदी साहित्यकार प्रवीण झा और व माया भारती से साक्षात्कार

डॉ. रेखा जी

सहायक प्राध्यापक

लॉयला कॉलेज (ऑटोनोमस)

चेन्नई –600034

ई मेल –sagarrekhasps1984@gmail.Com

Whatsapp –9445600456

(क) प्रवीण झा जी से साक्षात्कार द्वारा पूछे गए प्रश्न

डॉ. रेखा जी.– सर, आपको हिंदी लेखन की प्रेरणा कहाँ से मिली ?

प्रवीण झा– हिंदी लेखन की प्रेरणा तो विद्यालय काल में शिवानी, नागार्जुन, रेणु आदि को पढ़ कर मिली होगी। उस समय कुछ कविताएँ लिखता था । लेकिन, विज्ञान और चिकित्सा शिक्षा के दौरान यह पूरी तरह बंद हो गया । जब ज़िंदगी कुछ रास्ते पर आ गयी, करियर और पूंजी की चिंता घट गयी, फिर ऐसे शौक बाहर आ गए । इसमें हमारी पीढ़ी के लेखक दिव्य प्रकाश दुबे के एक यूट्यूब वीडियो का योगदान है, जब मुझे लगा कि अंग्रेजी लोग और तकनीकी दुनिया के लोग भी हिंदी में लिख रहे हैं । अंग्रेजी में पहले लिखता रहता था, लेकिन जब हिंदी में लिखना शुरू किया तो कलम यूँ भागी कि अब तक पाँच–सात लाख शब्द तो छप कर आ गए । शायद वह सदा से सहज रहा होगा, मुझे ही भान नहीं था ।

डॉ. रेखा जी.– सर, आपके प्रिय हिंदी रचनाकार कौन हैं ?

प्रवीण झा– उषाकिरण खान, अलका सरावगी, नीलोत्पल मृणाल, अशोक कुमार पाण्डेय, प्रभात रंजन, और पुष्यमित्र ।

डॉ. रेखा जी.– सर, प्रवासी जीवन की कौन सी विशेषताएँ हैं?

प्रवीण झा – यह तो निर्भर करता है कि प्रवास कहाँ है । लेकिन, प्रवास एक दूसरी संस्कृति को जानने–समझने और जीने का जरिया है । जैसे जब कोई बिहार से कर्नाटक प्रवास करता है, तो उसे नयी भाषा (कन्नड़) सीख लेनी चाहिए । पहली विशेषता भाषा ही है, जिसे संस्कृति का प्रवेश–द्वार कहा जा सकता है । इसके अतिरिक्त हर स्थान की संस्कृति के कुछ ख़ास खान–पान, विधि–व्यवहार होते हैं, जिनसे जुड़ जाना चाहिए । प्रकृति भी भिन्न होती है, जो तीसरी विशेषता है । इसके अतिरिक्त कला, संगीत और अन्य चीजें प्रवास से जुड़े हैं ।

डॉ. रेखा जी.– सर, आपकी डायरी लेखन 'खुशहाली का पंचनामा' में नार्वे और भारतीय संस्कृति व सभ्यता का तालमेल देखने को मिलता है, इसका क्या राज़ है ?

प्रवीण झा – इसका राज यह है कि मानव मूलत: एक ही प्रवृत्ति का जीव है । चाहे रंग–रूप अलग हों, है तो होमो सैपियंस ही । सभी एक ही तरह के संघर्ष से जुड़े हैं, जो भले ही तुलना करने पर अलग नज़र आएँ । विकसित देशों और विकासशील देशों में जो फर्क दिखता है, वह सिर्फ़ सतही फर्क है ।

डॉ. रेखा जी.– सर, हिंदी पाठक वर्ग के लिए आपका क्या सन्देश है?

प्रवीण झा – हिंदी पाठक वर्ग को कथा से बाहर झांकने की ज़रूरत है, जिसे कथेतर (नॉन–फिक्शन) कहते हैं । जब तक हम इतिहास, कला, संस्कृति का अध्ययन नहीं करेंगे, तब तक कथाओं का फलक नहीं बढ़ेगा। दुनिया की सबसे मशहूर विधा जिसे थ्रिलर कहते हैं, वह सुरेंद्र मोहन पाठक के बाद रेंग रही है। उसे गंभीर साहित्य न मानने के कारण बड़े प्रकाशक छापते नहीं। लेकिन, पाठकों में रुचि जगाने का कार्य ऐसी विधाएँ करती है। पाठक अपने में इस तरह का लचीलापन लाएँ कि स्वयं को किसी खाँचे में न बाँधे, और खुल कर हर विधा पढ़ें ।

(ख) माया भारती जी से साक्षात्कार द्वारा पूछे गए प्रश्न

डॉ. रेखा जी.– मैडम, आपको नार्वे में रहते हुए हिंदी कविता लेखन की प्रेरणा किससे और कब मिली?

माया भारती – ईश्वर की कृपा से और सुरेशचन्द्र शुक्ल ने मेरा हौंसला बढ़ाया।

डॉ. रेखा जी.– मैडम, आपके प्रिय हिंदी साहित्यकार कौन हैं?

माया भारती – गोस्वामी तुलसीदास मुझे बहुत पसंद है। मुझे सुरेशचन्द्र शुक्ल जी की कविताएं भी अच्छी लगती है। कुमार विशवास भी कविता बहुत अच्छी पढ़ते हैं । अवधी गीत भी बहुत अच्छे लगते हैं ।

डॉ. रेखा जी.– मैडम, नार्वे में हिंदी भाषा एवं हिंदी कविता की क्या माँग है?

माया भारती – हम जो महसूस करते हैं लिख लेते हैं । जैसे भारत में है वैसे ही नॉर्वे में है. ज्यादा फर्क नहीं है। यहाँ भी वही सुख दुःख और वहां भी वही सुख दुःख।

डॉ. रेखा जी.– मैडम, नार्वे में रहते हुए आपको अपने वतन की याद आना स्वाभाविक ही है,इस पर अपने विचार बताइए।

माया भारती – वतन की याद आती है। पर मैं अपने परिवार में खुश रहती हूँ। कुछ भारतीय परिवारों से प्रतिदिन संपर्क रहता है, वह भी महिलायें. कभी वह हमारे घर आ जाती हैं । कभी हम उनके घर चले जाते हैं । फोन से भी भारत में अपने परिवार से संपर्क में हूँ। अब तो बात करते समय हम एक दूसरे को देख सकते हैं ।

डॉ. रेखा जी.– मैडम, आप नार्वे में रहते हुए हिंदी पाठकों के लिए क्या सन्देश देना चाहते हैं?

माया भारती– अपनी भाषा सभी को सीखनी चाहिए। बच्चों को भी अपनी भाषा सीखनी चाहिए। अपनी भाषा सीखने से हमारे बच्चे कीर्तन भजन और अपनी संस्कृति सीख सकते हैं. बच्चे जब भारत जाएंगे आसानी से अपने गाँव में अपने दादा–दादी और नाना–नानी से बातचीत अपनी भाषा में कर सकेंगे। भाषा हमको जोड़ती हैं ।